

मन्नू भंडारी के साहित्य में परिवर्तित स्त्री-पुरुष संबंधों का विश्लेषण

मगर सविता उत्तम

शोधार्थी, हिंदी विभाग, भाषा साहित्य भवन,

गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद

ईमेल: savitagawade4@gmail.com

चलभाष: +91 8980766407

मार्गदर्शक: डॉ. जशाभाई पटेल

Paper Abstract- यह शोधपत्र मन्नू भंडारी के साहित्य में स्त्री-पुरुष संबंध, स्त्री-चेतना, आधुनिकता और संबंधों के बदलते स्वरूप का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है। मन्नू भंडारी 'नई कहानी' आन्दोलन की अग्रणी महिला साहित्यकार रही हैं। इनकी रचनाओं में मध्यवर्गीय जीवन विडंबना, स्त्री की स्थिति, आत्मसम्मान, संबंधों का द्वंद्व और सामाजिक संरचना का वास्तविकता के धरातल पर चित्रण किया गया है। 'आपका बंटी', 'एक इंच मुस्कान', 'अकेली', 'यही सच है' आदि रचनाएँ स्त्री के भीतर उठते संघर्ष, पुरुष प्रधान समाज का दबाव, आधुनिक स्त्री की स्वतंत्र सोच और आत्मनिर्भरता आदि को संवेदनशीलता से चित्रित करती हैं, जो आज भी प्रासंगिक बनी हुई हैं।

Paper Keywords- मन्नू भंडारी, स्त्री चेतना, स्त्री-पुरुष संबंध, आत्मसम्मान, संबंधों का द्वंद्व

पेपर का शीर्षक- मन्नू भंडारी के साहित्य में परिवर्तित स्त्री-पुरुष संबंधों का विश्लेषण

आधुनिक युग की हिंदी महिला साहित्यकारों में मन्नू भंडारी का नाम अग्रणीय है। इनका जन्म 3 अप्रैल 1931 में भानपुरा, मध्यप्रदेश में हुआ। इनका वास्तविक नाम महेंद्र कुमारी था। इनके पिता का नाम सुखसंपत राय और माताजी का नाम अनूपकुंवारी था। इन्होंने एम.ए. के बाद कलकत्ता के 'बालीगंज शिक्षा सदन' में अध्यापन का कार्य आरंभ किया। बाद में दिल्ली के 'मिरांडा हाऊस कॉलेज' में प्राध्यापिका के रूप में कार्यरत रही। राजेन्द्र यादव जी से इनका विवाह 22 नवंबर 1959 में हुआ, यह एक अंतरजातीय विवाह था। इनके पति राजेन्द्र यादव हिंदी साहित्य के जाने माने लेखक हैं। इनका साहित्यिक जीवन 1950 के दशक में आरंभ हुआ। इस समय हिंदी साहित्य में 'नई कहानी आन्दोलन' की लहर चल रही थी। इन्होंने समाज

में स्त्री की स्थिति और मानवीय संबंधों की जटिलता तथा स्त्री-पुरुष संबंधों को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया है। इनकी रचनाओं में मध्यवर्गीय जीवन की विडंबनाएँ और स्त्री चेतना का उदय स्पष्ट रूप से झलकता है।

इनकी कुछ साहित्यिक कृतियाँ हैं- उपन्यास: 'एक इंच मुस्कान' (1916), 'आपका बंटी' (1971), 'महाभोज' (1979), 'स्वामी' (1982) कहानियाँ: 'यही सच है' (1956), 'मैं हर गई' (1957), 'तीन निगाहों की एक तस्वीर' (1959), 'एक प्लेट सैलाब' (1968), 'त्रिशंकु' (1978) आदि।

मन्नू भंडारी की रचनाओं में पात्रों के संवाद, जीवन्तता और स्वाभाविकता अद्वितीय है। इनकी कहानियों की भावनात्मक गहराई और आकर्षक भाषा का प्रयोग पाठकों को बांधकर रखने का कार्य करता है। इनकी रचनाओं में अक्सर यथार्थ की झलक मिलती है। समयानुरूप स्त्री-पुरुष संबंधों में आने वाले परिवर्तन को मन्नू भंडारी ने बहुत ही गहराई और स्पष्टता के साथ अपनी रचनाओं में उकेरा है। इनके द्वारा रचित 'आपका बंटी' उपन्यास केवल स्त्री-पुरुष संबंधों का ही चित्रण नहीं है, अपितु स्त्री स्वतंत्रता, परिवार विघटन और आधुनिक युग की त्रासदी का मार्मिक दस्तावेज प्रस्तुत करता है। 'आपका बंटी' की शकुन अजय से संबंध विच्छेद कर डॉ. जोशी से पुनर्विवाह करके पूर्व सामाजिक मूल्यों की अवहेलना करती है। इस विवाह के मूल्य में पति को पराजित करने की भावना भी निहित है। शकुन का यह कथन उसकी इसी मानसिकता की ओर संकेत करता है। "अजय को उसे दिखा ही देना है, कि वह अगर नई जिंदगी की शुरुआत कर सकता है, तो वह भी कर सकती है।"¹

आज की नारी खुद को पुरुष से किसी भी प्रकार से कम नहीं मानती। वह सोचती है, कि यदि पुरुष तलाक देकर दूसरी शादी कर सकता है, तो वह क्यों जीवन भर किसी के नाम के सहारे घुटती रहे? इस उपन्यास में स्त्री केवल करुणा का प्रतीक नहीं अपितु आत्मनिर्भर और आत्मसम्मान का प्रतीक बनकर उभरकर आती दिखाई देती है।

राजेंद्र यादव और मन्नू भंडारी द्वारा संयुक्त रूप से रचित उपन्यास 'एक इंच मुस्कान' प्रेम के त्रिकोण की ऐसी कहानी है, जिसमें तीनों पात्र अतृप्त और असामंजस्य के स्थिति में

नजर आते हैं। तीनों के व्यवहार का असर एक दूसरे के जीवन में प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से होता दिखाई देता है। कहानी का नायक अमर प्रेम में इतना दुविधापूर्ण स्थिति में है, जहाँ वह किसी निर्णय पर पहुँचने के लिए खुद को असमर्थ पाता है। अमर और रंजना अच्छे मित्र हैं और जल्द ही विवाह बंधन में बंधने के उत्सुक हैं। तभी अमर का एक महिला मित्र 'अमला' के बीच पत्र व्यवहार का सिलसिला शुरू होता है। अमला अमर से कहती है- "मेरे अनेक मित्र हैं अमरजी, किसी से ब्रिज के क्लब स्पेड की बातें होती हैं, किसीसे साड़ियों और सिनेमाओं की। आप आज्ञा दें तो आपसे समय-समय पर लिखने-पढ़ने की बातें कर लिया करूँ?..."² आधुनिक युग में बदलते परिवेश में स्त्री और पुरुष एक अच्छे मित्र के रूप में एक दूसरे के साथ अपने विचार और भावनाएँ साँझा करने में कोई संकोच का अनुभव नहीं करते। परन्तु अमर का अमला के साथ संपर्क भावनात्मक रूप में आगे बढ़ने लगता है। इसी कारणवश जब अमर अमला से मिलकर लौटता है, उसके बाद वह बिल्कुल गुमसुम-सा हो जाता है। कुछ समय रंजना के साथ बिताने के बाद वह रंजना से विवाह के लिए मना कर देता है। अमर को लगता है, कि विवाह के बंधन में बंधने के बाद वह अपना लेखन कार्य नहीं कर पायेगा और बिना लिखे उसको ऐसा लगता है, मानो उसका दम घुट रहा है। उसके मन में उठ रहे इस द्वंद्व को इस कथन से समझ सकते हैं- "विवाह अपने आप में एक समझौता है। सोचो, विवाह के लिए नौकरी करनी होगी, बंधी हुई निश्चित जिंदगी बितानी होगी... और जैसे-जैसे उत्तरदायित्व बढ़ता जाएगा, सीमाएँ और संकीर्ण होती जाएंगी... इतनी संकीर्ण... नहीं, नहीं, रंजना, यह सब करने का मतलब होगा, अपनी हत्या करना, तुम्हारी हत्या करना, यह सब मैं नहीं कर सकूँगा।"³

इस उपन्यास में स्त्री और पुरुष के बीच अलग-अलग स्तर पर बनते बिगड़ते रिश्तों को बड़े ही मार्मिकता से दर्शाया गया है। अमर रंजना से कहता है, कि अमला और उसके बीच केवल एक मधुर मैत्री है। परन्तु जब उसे एहसास होता है कि रंजना को यह सब बहुत तकलीफ देता है, तब वह रंजना से कहता है, कि मैं यह सब छोड़ दूँगा और नौकरी करके रंजना का पति बनकर जीवन व्यतीत करूँगा। परन्तु रंजना जानती है, कि बिना लिखे अमर मर जाएगा।



वह चाहती है, कि अमर लिखे, खूब लिखे इसके लिए भले ही वह मिटती चली जाए। परंतु आगे जो कुछ वह देखती है तब वह अमर से अलग होने का निश्चय करती है। रंजना के मन में अनेक विचार आते हैं- “इस रीते मन में कुछ भी तो नहीं है तुम्हारे लिए... न प्यार...न घृणा...। झूठ न बोलूँ तो रोम-रोम से दूराशीष ही निकल रही है। ईश्वर करें, तुम भी जिन्दगी भर यों ही जलो...। जलो और जानो कि असफल प्यार का दर्द भी क्या होता है... किसीकी आत्मा की कचोट कैसी होती है।”⁴ एक ओर तो रंजना चाहती है, कि अमर अपना लेखन कार्य जारी रखे और अपनी इच्छा पूरी करे। वही दूसरी ओर उसके लिए बहुआ निकल रही है। यह मनुष्य के मानसिक और भावनात्मक स्थिति के द्वंद्व की त्रासदी है।

मनुष्य जीवन की यह वास्तविकता है, कि मनुष्य समाज और सामाजिक बंधनों के चलते अक्सर अपने असली रूप को लोगों से बचाए फिरता है। “एक आदमी भी तुम बता सकते हो, जो अपने असली रूप में सबके सामने आने का साहस रखता है? तुम जैसे बाहर से दिखलाई देते हो, क्या भीतर से भी वैसे ही हो? ऐसा होता नहीं अमर! आदमी चाहे एक बार साहस भी कर लें, पर आसपास वाले उसके उस रूप को कभी बर्दाश्त नहीं कर सकेंगे।”⁵

मन्नू भंडारी द्वारा रचित ‘अकेली’ कहानी स्त्री के समर्पण और पुरुष प्रधान संस्कृति की झलक प्रस्तुत करती है। सोमा बुआ एक परित्यक्ता है। सोमा बुआ का अकेलापन उसके आत्मसम्मान को पीछे छोड़ता-सा नजर आता है। स्त्री होना और उसपर उसका अकेलापन, स्त्री की दैन्यता का चरम बिंदु कहा जा सकता है। यह कहानी पुरुषप्रधान समाज में स्त्री जीवन के व्यथा को प्रस्तुत करती है। पुरुष अपने दायित्वों से पीछे हट जाए तो कोई उस पर सवाल नहीं उठाता। इसके विपरीत पति द्वारा सोमा बुआ पर अपना अधिकार जमाना और प्रतिव्रता नारी-सा धर्म निभाते हुए सोमा बुआ का सबकुछ सहन कर जाना और अपनी अंतर्वेदना को अभिव्यक्त करते हुए कहना- “सुनने को तो सुनती ही हूँ, पर मन तो दुखता ही है कि एक महीने को आते हैं तो भी कभी मीठे बोल नहीं बोलते।”⁶ अपने दुख को भुलाते हुए संबंधों का निर्वाह करने की



जो लालसा सोमा बुआ के अंदर है, जिसके कारण उन्हें अपने पति द्वारा कटु वचन भी सुनने पड़ते हैं।

वह अपने भाग्य को कोसते हुए कहती हैं- “देवर जी को मरे पच्चीस साल हो गए, उसके बाद से तो कोई संबंध ही नहीं रहा। रखें भी कौन? यह काम तो मर्दों का होता है, मैं तो मर्दवाली होकर भी बेमरद की हूँ।”⁷ इस कहानी में पुरुष प्रधान संस्कृति का चित्र साफ दिखाई देता है, जहाँ स्त्री अपने मान सम्मान के लिए पुरुष पर निर्भर है। वह कोई भी निर्णय अपनी मर्जी से नहीं ले सकती। यह दृश्य समाज की निम्न मानसिकता को दर्शाता है।

मन्नू भंडारी द्वारा रचित कहानी ‘यही सच है’ में समय के साथ स्त्री-पुरुष की सोच में आते परिवर्तन को दर्शाती है। शिक्षा और आत्मनिर्भरता के चलते आधुनिक युग की स्त्री अपना जीवन अपने शर्तों पर जीना पसंद करती है। इस कहानी की नायिका (दीपा) जब अपने पूर्व प्रेमी से मिलती है, तब उसका मन विचलित हो जाता है और वह अपने वर्तमान प्रेमी को भूलकर (निशीथ) पूर्व प्रेमी के खयालों में खो जाती है। दीपा के दुविधा भरे मन में अनेकों विचार कौंधने लगते हैं। जब दीपा और निशीथ साथ में कॉफी पीते हैं। तब निशीथ गुमसुम-सा बैठा रहता है और दीपा के मन में न जाने कितने सवाल घूमते रहते हैं। “मन में प्रचंड तूफान! पर फिर भी निर्विकार भाव से मैं टैक्सी में आकर बैठती हूँ.... फिर वही मौन, वही दूरी। पर जाने क्या है कि मुझे लगता है कि निशीथ मेरे बहुत निकट आ गया है, बहुत ही निकट! बार-बार मेरा मन करता है कि क्यों नहीं निशीथ मेरा हाथ पकड़ लेता, क्यों नहीं मेरे कंधे पर हाथ रख देता? मैं जरा भी बुरा नहीं मानूँगी, जरा भी नहीं! पर वह कुछ भी नहीं करता।”⁸ आधुनिकता के नाम पर किस प्रकार से नैतिक मूल्यों का विघटन होता जा रहा है, यह स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है, कि मन्नू भंडारी ने हिंदी कथा साहित्य में एक ओर तो पारंपरिक पुरुष प्रधान संस्कृति का वर्णन किया है। जहाँ ‘अकेली’ कहानी की नायिका प्रेम, त्याग और समर्पण के बावजूद भी वांछित सम्मान और प्रेम नहीं पा सकती है। वही

आधुनिकता के नाम पर आधुनिक युग की स्त्री न केवल अपने निर्णय स्वयं लेती दिखाई देती है, अपितु कहीं-कहीं अपने संस्कार और मर्यादाओं को लाँघती भी नज़र आती है। इन सब में अत्यंत महत्वपूर्ण बात यह है, कि समय के साथ-साथ अनेक स्तर पर स्त्री और पुरुष की सोच में भी परिवर्तन आया है। समाज के मानसिकता में आया हुआ यह सकारात्मक परिवर्तन आने वाली पीढ़ियों को नई संवेदना और नई दृष्टि प्रदान करेगा। मन्नू भंडारी ने अपनी रचनाओं में व्यक्ति की मानसिकता, संघर्ष और आत्मसम्मान को केंद्र में रखा है। मन्नू भंडारी का साहित्य केवल मनोरंजन का साधन ही नहीं है अपितु समाज में स्त्री की अस्मिता और आत्मसम्मान की पुकार है। उनका साहित्य आज भी उतना ही प्रासंगिक है और हमेशा रहेगा।

सन्दर्भ:

1. आपका बंटी, मन्नू भंडारी, राधाकृष्णन् प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 45
2. एक इंच मुस्कान, राजेन्द्र यादव और मन्नू भंडारी, पृ. 9.
3. एक इंच मुस्कान, राजेन्द्र यादव और मन्नू भंडारी, पृ. 43-44.
4. एक इंच मुस्कान, राजेन्द्र यादव और मन्नू भंडारी, पृ. 107.
5. एक इंच मुस्कान, राजेन्द्र यादव और मन्नू भंडारी, पृ. 149.
6. मेरी प्रिय कहानियाँ, मन्नू भंडारी 'अकेली' पृ. 13
7. मेरी प्रिय कहानियाँ, मन्नू भंडारी 'मजबूरी' पृ. 22
8. मेरी प्रिय कहानियाँ, मन्नू भंडारी, 'यही सच है' पृ. 83.